परमेश्वर की आवाज़ सुनना

आत्मा का उण्डेला जाना

कलीसिया का पहला दिन शांत या सभ्य नहीं था। यह कोई व्यवस्थित आराधना सभा जैसी नहीं दिखती थी जिसमें गीत, घोषणा और चढ़ावा लिया जाए। प्रेरितों के काम 2 कहता है कि यह आग, हवा और भाषाओं के साथ शुरू हुआ। सोचिए वहाँ होना कैसा रहा होगा: एक प्रार्थना सभा अचानक ऐसे टूट जाती है जैसे तूफ़ान ने भवन को हिला दिया हो। आग की जिह्वाएँ प्रत्येक व्यक्ति के सिर पर आकर ठहर जाती हैं। गलील के मछुआरे वे भाषाएँ बोलने लगते हैं जो उन्होंने कभी नहीं सीखी थीं।

परमेश्वर एक बात साफ़ कर रहे थे। अब से उनके लोग केवल पत्थर की पट्टिकाओं पर लिखे नियमों से नहीं पहचाने जाएँगे, बल्कि उनके आत्मा के साथ जीवित बातचीत से पहचाने जाएँगे। मसीही जीवन चुप रहने के लिए नहीं है। यह जीवित और शक्तिशाली होने के लिए है।

पतरस, जिसने कुछ ही दिन पहले एक दासी के सामने यीशु का इनकार किया था, अचानक खड़ा हुआ और आग की तरह उपदेश देने लगा। और उसका स्पष्टीकरण क्या था?

“अन्तिम दिनों में, परमेश्वर कहता है,
मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उण्डेलूँगा।
तुम्हारे बेटे-बेटियाँ भविष्यवाणी करेंगे,
तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे,
तुम्हारे बूढ़े स्वप्न देखेंगे।
यहाँ तक कि अपने दास-दासियों पर भी
मैं उन दिनों अपना आत्मा उण्डेलूँगा,
और वे भविष्यवाणी करेंगे।” (प्रेरितों 2:17–18)

दूसरे शब्दों में: सब शामिल हैं। कोई भी बाहर नहीं है। यदि तुम यीशु से सम्बन्ध रखते हो, तो तुम आत्मा से भर सकते हो और उसकी आवाज़ सुन सकते हो।

उसकी आवाज़ क्यों ज़रूरी है

यीशु ने सरलता से कहा: *"मेरी भेड़ें मेरी आवाज़ सुनती हैं; मैं उन्हें जानता हूँ, और वे मेरे पीछे-पीछे चलती हैं।"* (यूहन्ना 10:27)

ध्यान दीजिए, उन्होंने यह नहीं कहा: *"मेरी भेड़ें मेरी किताब पढ़ती हैं और मेरे उपदेश याद करती हैं।"* ये सब महत्वपूर्ण हैं, पर यीशु ने कहा उनकी भेड़ें **उनकी आवाज़ सुनती हैं।**

समस्या यह है कि बहुत से मसीही लोग यह अपेक्षा करना छोड़ चुके हैं। वे बाइबल पढ़ते हैं, कलीसिया जाते हैं, यूट्यूब पर उपदेश सुनते हैं—पर मन ही मन मान चुके हैं कि परमेश्वर उनसे व्यक्तिगत रूप से कभी नहीं बोलेगा।

पर शास्त्र हमें यह अलग करने नहीं देता कि आत्मा से भरना और उसकी आवाज़ सुनना दो अलग चीज़ें हैं। जब आत्मा प्रेरितों के काम 19 में उतरा, तो लोगों ने भाषाएँ बोलीं और भविष्यवाणी की। पौलुस ने कुरिन्थियों से कहा: *"आत्मिक वरदानों के लोभी बनो, और विशेषकर इसलिये कि तुम भविष्यद्वाणी करो।"* (1 कुरिन्थियों 14:1)

और फिर उन्होंने भविष्यवाणी को परिभाषित किया: यह लोगों को **शक्ति, प्रोत्साहन और सांत्वना** देने के लिए है। सीधी भाषा में: भविष्यवाणी डरावनी बात नहीं है। यह कुछ "सुपर मसीहियों" के लिए नहीं है। यह परमेश्वर अपने बच्चों से बातें कर रहा है।

परमेश्वर की आवाज़ कैसे सुनें

पहला, विश्वास करो कि यह तुम्हारे लिए है। पिन्तेकुस्त के दिन सब शामिल थे—बेटे, बेटियाँ, बूढ़े, जवान, दास, दासियाँ। यदि तुम मसीह में हो, तो उसकी आवाज़ तुम्हारे लिए है।

दूसरा, गरज का इंतज़ार मत करो। हाँ, परमेश्वर समुद्र बाँट सकता है और पहाड़ हिला सकता है। पर अक्सर उसकी आवाज़ एक विचार, एक हल्की चुभन, या तुम्हारे दिल में शांति जैसी होती है। यशायाह 30:21 कहता है: *"तेरे कान पीछे से यह वचन सुनेंगे कि यह मार्ग है, इसी में चल।"*

कभी-कभी यह नाटकीय नहीं होता। एक बार हमारे मिशन संगठन के प्रमुख को बस यह विचार आया: *"उन्हें वहाँ से बाहर निकालो, वे मर सकते हैं।"* यह बादलों से गूँजती आवाज़ नहीं थी। यह एक फुसफुसाहट थी, पर उसका बोझ भारी था। और हाँ, उस पर चलने से हमारी जानें बचीं।

तीसरा, ध्यान दो। परमेश्वर बोलता है, पर हम में से ज़्यादातर इतने व्यस्त और विचलित हैं कि सुन नहीं पाते। हम फोन पर स्क्रॉल करते रहते हैं, वीडियो देखते रहते हैं। पर यदि तुम समय निकालो, सच में सुनो और जो अनुभव करो उसे लिखो, तो तुम चकित हो जाओगे कि परमेश्वर कितनी बार बोलता है। बाइबल के पास एक नोटबुक रखो। प्रार्थना में उसकी बात लिखने की आदत डालो।

चौथा, याद रखो तुम कौन हो। बहुत से मसीही सोचते हैं, *"परमेश्वर मुझसे बात नहीं करेगा, मैं योग्य नहीं हूँ।"* पर यह झूठ है। खोया हुआ पुत्र सोच रहा था कि वह केवल दास की तरह लौट सकता है। पर पिता दौड़ा, उसे गले लगाया, अंगूठी और पोशाक दी, और उत्सव किया। तुम कोई भिखारी नहीं हो। तुम परमेश्वर की संतान हो, जो मसीह की धार्मिकता से ढके हुए हो। और इसी कारण, वह तुमसे बात करना चाहता है।

पाँचवाँ, आगे बढ़ो। रुकी हुई गाड़ी मोड़ना कठिन है। अक्सर परमेश्वर तब बोलता है जब हम विश्वास में कदम उठा रहे होते हैं। एक कदम भरोसे का लो। किसी पड़ोसी के लिए प्रार्थना करो। किसी दरवाज़े पर दस्तक दो। जब तुम आगे बढ़ोगे, आत्मा और साफ़-साफ़ बोलेगा।

उत्तम भाग

सच्चाई यह है कि कलीसिया की संस्कृति अक्सर मरथा जैसी व्यस्तता को इनाम देती है—हमेशा काम में लगी, हमेशा उत्पादन करने वाली। पर स्वर्ग अब भी मरियम का जश्न मनाता है, जिसने यीशु के चरणों में बैठकर सुना।

सेवा बिना उपस्थिति केवल शोर है। पर जब हम उत्तम भाग चुनते हैं—संबंध, प्रदर्शन नहीं—तो फल स्वाभाविक रूप से आता है। चमत्कार होते हैं। साहस उठता है। और मंत्रालय आनन्द के साथ बहता है, थकान से नहीं।

सच्चा प्रश्न यह नहीं है: *"मैं परमेश्वर के लिए कितना कर सकता हूँ?"*
सच्चा प्रश्न यह है: *"मैं यीशु के साथ होने में कितना आनन्द ले सकता हूँ?"*

निष्कर्ष

कलीसिया का जन्म भाषाओं, भविष्यवाणी, दर्शन और स्वप्नों के साथ हुआ था। यह आज भी नहीं बदला। परमेश्वर अब भी बोलता है। और वह चाहता है कि तुम उसकी आवाज़ सुनो।

इसलिए समय निकालो। ध्यान दो। विश्वास करो कि तुम योग्य हो। विश्वास में कदम उठाओ। और देखो कि आत्मा कैसे तुम्हारे जीवन में फुसफुसाता है, मार्गदर्शन करता है, और कभी-कभी दहाड़ता भी है।

शायद इस प्रार्थना से शुरू करो:

"पवित्र आत्मा, मेरे कान खोल। मुझे सिखा कि हर फुसफुसाहट की क़द्र करूँ। मुझे जल्दी आज्ञा मानना सिखा। और मुझे अपने पिता की आवाज़ सुनने वाला पुत्र, पुत्री बना।" आमीन।